

जैव विविधता (संशोधन) वधियक, 2021

प्रलिस के लयः

जैव विविधता (संशोधन) वधियक, 2021, जैव विविधता पर अभसिमय, [राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधकरण](#), बौधक संपदा अधकार, [आयुष](#)

मेन्स के लयः

जैव विविधता (संशोधन) वधियक, 2021

चर्चा में क्यो?

हाल ही में लोकसभा में [जैव विविधता \(संशोधन\) वधियक, 2021](#) पारति कया गया ।

पृष्ठभूमः

- जैव विविधता अधनियम, 2002 को वरष 1992 के [जैव विविधता अभसिमय](#) (Convention on Biological Diversity- CBD) के तहत भारत की प्रतबिद्धताओं के जवाब में अधनियमति कया गया था ।
 - CBD के अनुसार, देशों को अपने जैविक संसाधनों को नयितरति करने का पूरा अधकार है और यह राष्ट्रीय कानून के आधार पर इन संसाधनों तक पहुँच को वनियमति करने के लयि एक मंच प्रदान करता है ।
- जैविक संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधति करने के लयि यह अधनियम एक त्र-स्तरीय संरचना की स्थापना करता है:
 - राष्ट्रीय स्तर पर [राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधकरण](#) (National Biodiversity Authority- NBA) ।
 - राज्य स्तर पर राज्य जैव विविधता बोर्ड (State Biodiversity Boards- SBBs) ।
 - स्थानीय स्तर पर जैव विविधता प्रबंधन समतियौं (Biodiversity Management Committees- BMC) ।
- दसंबर 2021 में वरष 2002 के अधनियम में संशोधन के लयि लोकसभा में जैव विविधता (संशोधन) वधियक, 2021 पेश कया गया था ।
 - इन संशोधनों का उद्देश्य भारत में धारणीय जैव विविधता संरक्षण और उपयोग को बढ़ावा देते हुए इस अधनियम को वर्तमान की मांगों और प्रगत के साथ संरेखति करना है ।

जैविक विविधता (संशोधन) वधियक, 2021 के प्रमुख प्रावधानः

प्रावधान	जैविक विविधता अधनियम, 2002	2002 के अधनियम में संशोधन
जैविक संसाधनों तक पहुँच	अधनियम के अनुसार, भारत में जैविक संसाधनों या संबंधति ज्ञान तक पहुँचने के इच्छुक कसी भी व्यक्त को पूरवानुमति प्राप्त करने या नयामक प्राधकरण को अपने इरादे के बारे में सूचति करने की आवश्यकता है ।	वधियक उन संस्थाओं और गतवधियौं के वर्गीकरण को संशोधति करता है जनिके लयि सूचना की आवश्यकता होती है, साथ ही कुछ मामलों में छूट भी प्रदान की जाती है ।
बौधक संपदा अधकार	बौधक संपदा अधकारों (IPR) के संबंध में अधनियम वर्तमान में भारत से जैविक संसाधनों से संबंधति IPR के लयि आवेदन करने से पहले NBA अनुमोदन की मांग करता है ।	वधियक सुझाव देता है कि IPR के वास्तविक अनुदान से पहले अनुमोदन की आवश्यकता होगी, आवेदन प्रकरया के दौरान नहीं ।
आयुष चकित्सकों को छूट		यह पंजीकृत आयुष चकित्सकों और संहतिबद्ध पारंपरिक ज्ञान तक पहुँच रखने वाले लोगों को कुछ उद्देश्यों के लयि जैविक संसाधनों तक पहुँच हेतु राज्य जैव विविधता बोर्डों को पूरव सूचना देने से छूट देने का प्रयास करता है ।
लाभ साझा करना	यह अधनियम लाभ साझा करने का आदेश देता है जसिमें उन लोगों के साथ मौद्रिक और गैर-	

	<p>मौद्रिक लाभ साझा करना शामिल है जो जैव विविधता का संरक्षण करते हैं या इससे संबंधित पारंपरिक ज्ञान रखते हैं।</p> <p>NBA वभिन्न गतिविधियों के लिये मंजूरी देते समय लाभ साझा करने की शर्तें निर्धारित करता है।</p>	<p>यह वधियक अनुसंधान, जैव-संरक्षण और जैव-उपयोग द्वारा लाभ साझा करने की आवश्यकताओं की प्रयोज्यता को हटा देता है।</p>
आपराधिक दंड	<p>यह अधिनियम वशिष्ट गतिविधियों के लिये अनुमोदन या सूचना प्राप्त न करने जैसे अपराधों हेतु कारावास सहित आपराधिक दंड लगाता है।</p>	<p>दूसरी ओर, यह वधियक अपराधों को अपराध की श्रेणी से हटाता है तथा इसके बदले एक लाख से पचास लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान करता है।</p>

जैविक विविधता (संशोधन) वधियक, 2021 से संबंधित चर्चाएँ:

- **संरक्षण से अधिक उद्योग को प्राथमिकता:**
 - आलोचकों का तर्क है कि संशोधन **जैव विविधता संरक्षण** पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय **उद्योग के हितों को प्राथमिकता** प्रदान करता है जो CBD की भावना के वरिद्ध है।
 - CBD उन **समुदायों के साथ जैव विविधता के उपयोग** से होने वाले लाभों को साझा करने पर ज़ोर देता है जिनहोंने इसे पीढ़ियों से संरक्षित किया है।
 - यह संशोधन **लाभ-वितरण** और सामुदायिक भागीदारी के **ढाँचे को कमज़ोर** कर सकता है।
- **उल्लंघनों का अपराधीकरण:**
 - इस वधियक में नियमों का पालन न करने वाले दलों के खिलाफ FIR दर्ज करने की **NBA की शक्ति** को हटाकर उल्लंघनों को अपराध की श्रेणी से पृथक करने का प्रस्ताव है।
 - इससे **जैव विविधता संरक्षण कानूनों** का कार्यान्वयन कमज़ोर हो सकता है, जिससे अवैध गतिविधियों को रोकने के प्रयासों में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- **घरेलू कंपनियों के लिये छूट:**
 - केवल "वैदेशी-नियंत्रित कंपनियों" को **जैव विविधता संसाधनों का उपयोग करने के लिये अनुमति लेने की** आवश्यकता होगी। इससे संभावित रूप से वैदेशी शेयरधारिता वाली **घरेलू कंपनियों के लिये** अनुमोदन प्रक्रिया को दरकिनार करने में **परेशानियाँ उत्पन्न हो सकती हैं**, जिसके परिणामस्वरूप जैव विविधता के अनियंत्रित दोहन से चर्चाएँ बढ़ सकती हैं।
- **सीमित लाभ साझा करना:**
 - "पारंपरिक ज्ञान" का समावेश भारतीय चिकित्सा प्रणालियों के चिकित्सकों के अतिरिक्त कुछ उपयोगकर्ताओं को **लाभ साझा करने की आवश्यकता** से छूट प्रदान करता है।
 - इससे **मुनाफाखोर घरेलू कंपनियों** पारंपरिक ज्ञान रखने वाले समुदायों के साथ मुनाफा साझा करने की अपनी ज़िम्मेदारी से बच सकती हैं।
- **संरक्षण के मुद्दों की अनदेखी:**
 - आलोचकों का तर्क है कि यह संशोधन भारत में **जैव विविधता संरक्षण के समक्ष आने वाली चुनौतियों का पर्याप्त रूप से समाधान** नहीं करता है।
 - ऐसा प्रतीत होता है कि यह वधियक **वनियमों को कम करने और व्यावसायिक हितों को सुवर्धन बनाने** पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, जिससे जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान धारकों पर संभावित नकारात्मक प्रभाव के बारे में चर्चाएँ बढ़ गई हैं।

आगे की राह

- **आर्थिक विकास को बढ़ावा देने** और भारत की जैव विविधता के सतत संरक्षण को सुनिश्चित करने के **बीच संतुलन** बनाने की आवश्यकता है।
- स्थानीय समुदायों, स्वदेशी जनों, संरक्षणवादियों, वैज्ञानिकों और उद्योग प्रतिनिधियों सहित वभिन्न हितधारकों के साथ **पारदर्शी एवं समावेशी परामर्श** में संलग्न होने की आवश्यकता है।
- इससे यह सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में सभी दृष्टिकोणों पर विचार किया जाता है, ऐसे संशोधन जैव विविधता संरक्षण के सिद्धांतों के अनुरूप होते हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2023)

1. भारत में जैव विविधता प्रबंधन समितियाँ नागोया प्रोटोकॉल के उद्देश्यों को हासिल करने के लिये प्रमुख कुंजी हैं।
2. जैव विविधता प्रबंधन समितियों के अपने क्षेत्राधिकार के अंतर्गत जैविक संसाधनों तक पहुँच के लिये संग्रह शुल्क लगाने की शक्ति सहित पहुँच और लाभ सहभागिता निर्धारित करने के लिये महत्वपूर्ण प्रकार्य हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

- (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **भारत में जैव विविधता शासन:** भारत का जैविक विविधता अधिनियम, 2002 (BD अधिनियम), नागोया प्रोटोकॉल से नकिटतम रूप से संबंधित है, इसका उद्देश्य जैविक विविधता अभिसमय (CBD) के प्रावधानों को लागू करना है।
- नागोया प्रोटोकॉल ने अनुवंशिक संसाधनों में वाणज्यिक एवं अनुसंधान के उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु सरकार के ऐसे संसाधनों का संरक्षण करने वाले समुदाय के साथ लाभों को साझा करने की मांग की।
- जैविक विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 41(1) के तहत राज्य में प्रत्येक स्थानीय निकाय अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर एक जैव विविधता प्रबंधन समिति का गठन करेगा। **अतः कथन 1 सही है।**
- BMC का मुख्य कार्य स्थानीय लोगों के परामर्श से जन जैव विविधता रजिस्टर (PBR) तैयार करना है। BMC, PBR में दर्ज सूचनाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने, विशेष रूप से बाहरी व्यक्तियों और एजेंसियों तक इसकी पहुँच को वनियमित करने के लिये उत्तरदायी होगी।
- जन जैव विविधता रजिस्टर (PBR) तैयार करने के अतिरिक्त BMC अपने संबंधित क्षेत्राधिकार में नमिनलखित के लिये भी ज़िम्मेदार है: -
 - **जैविक संसाधनों का संरक्षण, सतत उपयोग एवं पहुँच तथा लाभ को साझा करना।**
 - वाणज्यिक एवं अनुसंधान उद्देश्यों हेतु जैविक संसाधनों और/या संबद्ध पारंपरिक ज्ञान तक पहुँच का वनियमन।
- BMC जैविक संसाधनों तक पहुँच और प्रदान किये गए पारंपरिक ज्ञान के वविरण, **संग्रह शुल्क का वविरण**, प्राप्त लाभों का वविरण और अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत उनके साझाकरण के तरीके के बारे में जानकारी देने वाला एक रजिस्टर भी बनाए रखेगी। **अतः कथन 2 सही है।**

??????:

प्रश्न. भैषजिक कंपनियों द्वारा आयुर्विज्ञान के पारंपरिक ज्ञान को पेटेंट कराने से भारत सरकार किस प्रकार रक्षा कर रही है? (2019)

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/biological-diversity-amendment-bill-2021>

